The mass

Press Clippings

18/8/2018, प्रभात खबर (लाइफ पटना) पेज - 1

शैल चित्र कला प्रदर्शनी आज से

पटना. बिहार संग्रहालय के अस्थायी दीर्घा में विश्व शैल चित्र कला पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन होगा. प्रदर्शनी के साथ विशिष्ठ व्याख्यानों का भी आयोजन होगा जिसमें 18 अगस्त को शाम 5:30 बजे से रॉक आर्ट ऑफ इंडिया और 19 अगस्त को शाम 5:30 बजे से प्रि–हिस्ट्री ऑफ इस्टर्न इंडिया विषय पर विशेष व्याख्यान दिया जाएगा. कार्यक्रम के साथ साथ विद्यालयों के बच्चों के लिए दो दिवसीय शैल चित्र कला बाल कार्यशाला का आयोजन 18 एवं 19 अगस्त को दोपहर तीन बजे आयोजित किया जायेगा.

The Times of India (pg. 1)
18-8-2018

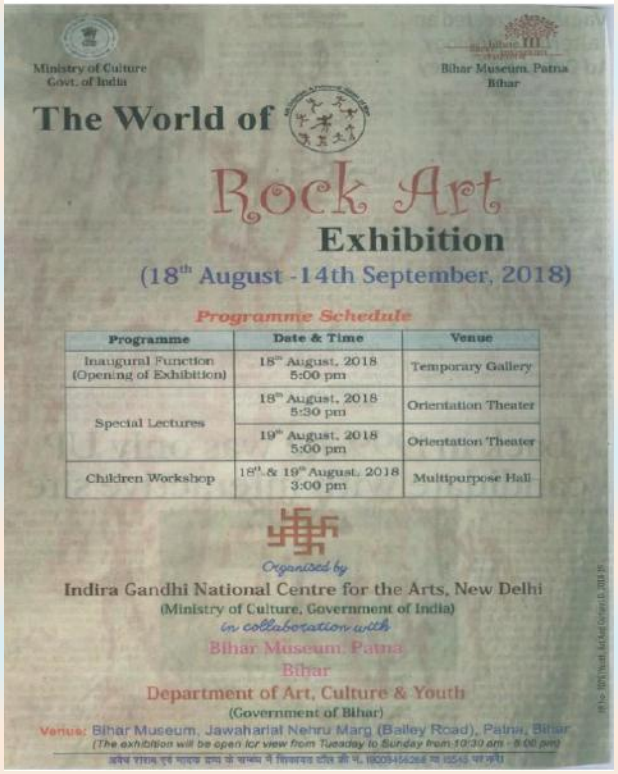

दैनिक भास्कर (सिटी भास्कर, पृष्ठ-1)
18-8-2018

बिहार म्यूजियम में होगा एग्जीबिशन, आर्ट फिल्म फेस्टिवल की तिथि की घोषणा बाद में

शैलचित्र में देख सकते हैं सबसे प्राचीन कला

सिटी रिपोर्टर, पटना

आज से एग्जीबिशन

बिहार म्यूजियम और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली की ओर से बिहार म्यूजियम के अस्थायी दीर्घा में विश्व शैलचित्र कला पर आधारित एक एग्जीबिशन का आयोजन किया जा रहा है। एग्जीबिशन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की राष्ट्रीय परियोजना शैल चित्रकला का एक भाग है जो विद्यालय के बच्चों, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के छात्रों और आम लोगों के बीच मानवजाति की इस प्रारंभिक रचनात्मक कला के विषय में सूचना एवं जागरुकता प्रदान करती है। विश्व के शैलचित्र मानवीय प्रयासों की रोचक गाथा है, जिन्हें मानव ने अपने सौंदर्य बोध को वास्तविक रूप देने का प्रयास किया है।

यह कार्यक्रम 17 अगस्त शुक्रवार को होना था, लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन के कारण स्थगित कर दिया गया। अब कार्यक्रम 18 अगस्त को शाम 5 बजे से होगा। इस एग्जीबिशन को पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रास बिहारी प्रसाद सिंह और म्यूजियम के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी की उपस्थिति में शनिवार को शाम 5 बजे आम लोगों के लिए खोला जाएगा। इस एग्जीबिशन के साथ ही दो विशिष्ट व्याख्यान का भी आयोजन होगा। 5.30 बजे से प्रो. वीएच सोनावने की ओर से रॉक आर्ट ऑफ इंडिया विद इन्फेसिस ऑन इस्टर्न इंडिया विषय पर विशेष व्याख्यान अभिविन्यास थियेटर में दिया जाएगा। कार्यक्रम के साथ ही स्कूल के बच्चों के लिए दो दिवसीय शैलचित्र कला बाल कार्यशाला का आयोजन मल्टीपरपस हॉल में 18 और 19 अगस्त को शाम 3 बजे आयोजित किया जाएगा। 12 अगस्त से चल रहे आर्ट फिल्म फेस्टिवल जिसे 22 अगस्त तक चलना था उसे भी पूर्व प्रधानमंत्री के निधन के कारण स्थगित कर दिया गया। बिहार म्यूजियम के निदेशक यूसुफ ने बताया कि फेस्टिवल फिर कब शुरू होगा इसकी घोषणा बाद में की जाएगी।

हिंदुस्तान (पृष्ठ-9)
19-8-2018

पत्थरों पर हुई चित्रकारी को देखते रह जाएंगे

पटना | कार्यालय संवाददाता

पेंटिंग की शुरुआत कैसे हुई, आदिमानव गुफाओं में कैसे चित्रकारी करते थे, पत्थरों पर कैसे-कैसे चित्र बनाए जाते थे, भारत में सबसे ज्यादा शैल चित्र कहां मिलते हैं, अगर इनके सबके बारे में देखना-समझना चाहते हैं तो बिहार संग्रहालय चले आइए।

बिहार संग्रहालय में शैल चित्र प्रदर्शनी की शुरुआत हो चुकी है। 14 सितंबर तक चलनेवाली इस प्रदर्शनी की शुरुआत शनिवार शाम हो गई।

इतिहास छूटे ना : आईजीएनसीए यानी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली की ओर से लगाई गई इस प्रदर्शनी में बतौर प्रथम दर्शक पटना विवि के कुलपति प्रो रासबिहारी सिंह पहुंचे। व्याख्यान के दौरान उन्होंने कहा कि बिहार में भी शैल चित्र की दिशा में कार्य करने की जरूरत है।

पटना विवि इसके लिए हर संभव मदद करेगा। आईजीएनसीए के दृश्य विभाग के परियोजना निदेशक डॉ. बंशीलाल मल्ला ने कहा कि बिहार में कैमूर, जमुई, गोपालगंज सहित कई जगहों पर शैल चित्र मिलते हैं। जरूरत है इसके बारे में जागरूकता लाने की। प्रो. वीएच सोनावने ने कहा विकास की दौड़ में इतिहास पीछे छूट रहा है। जंगल, पहाड़, पत्थर काटे जा रहे हैं और हमारा इतिहास नष्ट हो रहा है। इस पर जागरूकता लाने की जरूरत है। अध्यक्षता डॉ. यूएस द्विवेदी ने की। इस अवसर पर डीएन सिन्हा, डीडी सिंह, गौतमी भट्टाचार्या, उमेश कुमार, विमल तिवारी, डॉ. शंकर सुमन, डॉ रणवीर सिंह राजपूत, वीसी उपाध्याय सहित कई लोग उपस्थित थे।

पटना स्थित बिहार संग्रहालय में शनिवार को मानव जाति की प्रारंभिक रचनात्मक कला का उत्सव शैल चित्रकला विषय पर प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी देखते पटना विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रासबिहारी सिंह व अन्य। • हिन्दुस्तान

शैल चित्र प्रदर्शनी

- बिहार संग्रहालय में आईजीएनसीए की ओर से प्रदर्शनी शुरू
- पहले दिन शैल चित्र पर व्याख्यान का आयोजन हुआ, लोगों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया

दो सौ फोटो एक साथ लगाए गए

संग्रहालय की अस्थायी कला दीर्घा में प्रदर्शनी लगी है। कुल 200 फोटोग्राफ लगाए गए है। ये ऐसे फोटोग्राफ है, जो मानव जाति के प्रारंभिक रचनात्मक कला को सामने ला रहे हैं। मानव इतिहास के प्रारंभिक काल में आदिमानव कैसे गुफाओं में रहता था और अपने आसपास के पत्थरों पर कैसे पत्थरों से ही चित्रकारी करता था, इनसब चीजों को कैमरे में कैद करके दिखाया गया है। मध्यप्रदेश के जंगलों में मिलनेवाले पत्थरों के ऊपर आदिमानव ने कैसे चित्रकारी की थी, इसे दिखाया गया है।

दैनिक भास्कर (सिटी भास्कर, पृष्ठ-1)
19-8-2018

बिहार म्यूजियम में पेंटिंग्स ने यूथ्स को पूर्वजों से जोड़ा

टेंपररी गैलरी में द वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट एग्जीबिशन

सिटी रिपोर्टर | पटना

बिहार म्यूजियम और इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स नई दिल्ली की ओर से टेंपररी गैलरी में द वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट एग्जीबिशन की शुरुआत बिहार म्यूजियम में शनिवार को हुई। गैलरी में पहले दिन दर्शकों की काफी भीड़ देखने को मिली। इसमें 200 पेंटिंग्स और तीन ट्राइब्ल लगाए गए हैं। ट्राइब्ल मुंबई, गुजरात और ओडिसा के हैं। इसमें दुनिया की बनाई पहली मूर्ति प्रदर्शित की गई है, जो तीन हजार बी.सी पुरानी है। इसे बिनर्स ड्राप के नाम से जाना जाता है। मध्य प्रदेश से सबसे ज्यादा पेंटिंग एग्जीबिट की गई है। बिहार के नवादा और गोपालगंज से दो पेंटिंग लगाई गई है।

मुख्य अतिथि के रूप में पटना विश्वविद्यालय के कुलपति रास बिहारी प्रसाद सिंह, म्यूजियम के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी, प्रो. वी.वी एच. सोनावने और डॉ. बी.एल. मल्ला उपस्थित थे। कार्यक्रम में पटना विश्वविद्यालय के कुलपति रास बिहारी प्रसाद सिंह ने कहा कि यहां के कलेक्शन काफी अच्छे हैं। पेंटिंग एग्जीबिशन को शानदार तरीके से प्रदर्शित किया गया है। यह एग्जीबिशन पूर्वजों से युवाओं को जोड़ता और मानव सभ्यता के विकास को बताता है। पेंटिंग बनाने वाले ने कितनी मेहनत की होगी, यह कार्य शैली से पता चलता है। कलाकार ने पेंटिंग में उस वक्त की सोच और अनुभव को व्यक्त किया है। हमें इस तरह के कोर्स कॉलेजों में भी कराना चाहिए, बशर्ते स्टूडेंट्स की रूचि हो। प्रो. वी.वी एच. सोनावने ने कहा कि इस तरह का एग्जीबिशन पहली बार लगाया गया है। इससे हमें सीख लेनी चाहिए। मौके पर डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी और डॉ. बी.एल. मल्ला ने भी अपनी बात रखी।

प्रभात खबर (लाइफ पटना)
19-8-2018

लाइफ a संडे

जर्नलिज्म जिंदगी का — पटना, रविवार 19.08.2018

बिहार म्यूजियम में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नयी दिल्ली के सहयोग से विश्व शैलचित्र कला विषय पर आधारित प्रदर्शनी की शुरुआत शनिवार से हो गयी है जो 14 सितंबर तक चलेगी. प्रदर्शनी की शुरुआत डॉ रास बिहारी प्रसाद सिंह, कुलपति, पटना विश्वविद्यालय और डॉ उमेश चंद्र द्विवेदी, पूर्व निदेशक, पटना संग्रहालय की उपस्थिति में की गयी. अपने संबोधन में डॉ रासबिहारी सिंह ने कहा कि बिहार म्यूजियम में एक जगह पर देश विदेश के सभी शैलचित्र लगाये गये हैं. इससे लोगों को काफी जानकारी मिलेगी. यहां एशिया, अस्ट्रेलिया और यूरोप के दस हजार साल पुराने शैल चित्र लगाये गये हैं जो मानव सभ्यता के विकास को बताते हैं.

10 हजार साल पहले मानव जानता था कि चित्र किस पत्थर पर बनाना है

जागरूकता के लिए लगायी गयी प्रदर्शनी

बिहार म्यूजियम में प्रदर्शनी देखतीं युवतियां.

रॉक आर्ट पर व्याख्यान का किया गया आयोजन

बिहार में मिलते हैं बहुतायत में शैलचित्र

दैनिक जागरण (जागरण सिटी पटना)
19-8-2018

शैल चित्र में दिखी मानवीय प्रयासों की रोचक गाथा

बिहार संग्रहालय में शनिवार से 14 सितंबर तक आयोजित विश्व शैलचित्र कला पर आधारित चित्रकला प्रदर्शनी की शुरुआत की गई। यह प्रदर्शनी सहभागिता कार्यक्रम के तहत इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की सहयोग से आयोजित की गई। कार्यक्रम का पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रास बिहारी प्रसाद सिंह ने उद्घाटन किया।

प्रो. रास बिहारी ने कहा, इस तरह की प्रदर्शनी हमें इतिहास से जोड़ती है। चित्रकला को देख कर लगता है कि उस समय भी चित्रों को बनाने में कितनी मेहनत करनी लगती थी। बिहार सरकार से गुजारिश करते हुए कहा कि पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग में सुविधाओं का विस्तार किया जाए। मौके पर प्रो. वीएच सोनावने द्वारा रॉक आर्ट ऑफ इंडिया विद इम्फेसिस ऑन इस्टर्न इंडिया पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें वीएच सोनावने ने रॉक आर्ट के शुरुआत के बारे में बताया। साथ ही रॉक आर्ट और इतिहास के लोगों का क्या फायदा हो सकता है इसके बारे में भी जानकारी दी।

दिख रहा मानव का बदलता स्वरूप

बिहार संग्रहालय में लगाई गई प्रदर्शनी में कुल 200 चित्रों को सजाया गया है। जिसमें बीस हजार साल पहले की स्थिति जैसे मानव के बदलते वेष, संस्कार व सभ्यता को दिखाने का प्रयास किया गया है। मौके पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के परियोजना निदेशक डॉ. बंशी लाल मल्ला ने बताया कि विद्वानों द्वारा उच्च परिपक्वता वाले ये रिकॉर्ड चालीस हजार पूर्व प्राचीन काल तक जा सकते हैं। प्रदर्शनी में विश्व शैलचित्र कला के साथ-साथ आदिवासियों के जीवन के विषय में भी जानकारी दी जा रही है। मुंबई, गुजरात और उड़ीसा के आदिवासियों पर विशेष फोकस किया गया है। जिसमें वो कैसे रहते हैं, वो कैसे कसम करते है इन सब के बारे में चित्रों के माध्यम से बताया जा रहा है। साथ ही गोपालगंज और नवादा की कला भी प्रदर्शनी में देखने को मिल रही है।

दैनिक भास्कर (सिटी भास्कर, पृष्ठ-1)
20-8-2018

पुरानी मूर्तियों पर इतिहास के छात्रों को रिसर्च करनी चाहिए

बिहार म्यूजियम और इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स नई दिल्ली की ओर से कार्यक्रम

सिटी रिपोर्टर | पटना

बिहार म्यूजियम और इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स नई दिल्ली की ओर से टेम्परारी गैलरी में द वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट एग्जीबिशन के दूसरे दिन व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन रविवार को ओरिएंटेशन हॉल में हुआ। इसमें प्रो. आर. के. चट्टोपाध्याय ने प्री-हिस्ट्री ऑफ इस्टर्न इंडिया विषय पर कहा कि अभी भी बिहार में कई पुरानी मूर्तियों पर रिसर्च नहीं हो पाया है। इतिहास के छात्रों को शोध करना चाहिए। उन्होंने ओडिशा, बिहार और झारखंड पर जोर देते हुए कहा कि कुछ जगहों पर खोज पूरी हो गई है तो कुछ अभी भी बाकी है। इस मौके पर डॉ. रणबीर सिंह, डॉ. आशुतोष द्विवेदी, डॉ. रविशंकर गुप्ता और बिहार म्यूजियम के अपर निदेशक डॉ. रणवीर सिंह राजपूत मौजूद थे।

प्रभात खबर (लाइफ पटना, पृष्ठ-1)
20-8-2018

मानव जाति की शुरुआती कला था शैलचित्र

शैलचित्र कला पर आयोजित व्याख्यान में बैठे लोग.

■ **बिहार म्यूजियम में शैलचित्र कला पर व्याख्यान का आयोजन**

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शैलचित्र कला मानव जाति की शुरुआती रचनात्मक कला थी. एक ऐसी कला जिसमें मानव की शुरुआती रचनात्मकता झलकती है बल्कि यह भी पता चलता है कि वे कितने प्रयोगधर्मी थे. यदि आप गौर से इन शैलचित्रों को देखेंगे तो यह पता चलेगा कि उनकी कल्पनाशीलता में न केवल आम जनजीवन में प्रयोग आने वाली सामग्री थी बल्कि आम जीवन भी था. यह जानकारी बिहार संग्रहालय में शैलचित्र कला पर आयोजित व्याख्यान में प्रो आरके चट्टोपाध्याय ने दी. बिहार संग्रहालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के तत्त्वावधान में प्री हिस्ट्री ऑफ इस्टर्न इंडिया विषय पर विशेष व्याख्यान देते हुए प्रो चट्टोपाध्याय ने कहा कि हम सबको इसके इतिहास के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी जुटानी चाहिए. बिहार म्यूजियम नयी दिल्ली के सहयोग से अस्थायी दीर्घा में विश्व शैलचित्र कला पर आधारित एक प्रदर्शनी का आयोजन कर रहा है. इस प्रदर्शनी के साथ दो विशिष्ट व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया. इस व्याख्यान में डॉ विजय चौधरी, डॉ उमेश द्विवेदी, डॉ बीएल मल्ल, डॉ गौतमी भट्टाचार्य, डॉ रणवीर सिंह, डॉ जय किशन, डॉ आशुतोष द्विवेदी एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे. डॉ रवि शंकर गुप्ता द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया और डॉ रणवीर सिंह राजपूत, अपर निदेशक, बिहार संग्रहालय ने धन्यवाद ज्ञापन दिया.

दैनिक जागरण (पटना सिटी ,पृष्ठ-1)
20-8-2018

प्रकृति से जोड़ती विश्व शैलचित्र प्रदर्शनी

बिहार म्यूजियम में विश्व शैलचित्र कला पर आधारित चित्रकला प्रदर्शनी के दूसरे दिन रविवार को व्याख्यान सुनने और कलाकृतियों का दीदार करने के लिए लोगों का जुटान हुआ। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित प्रदर्शनी में दुनिया की सबसे पहली मूर्ति और आदि काल से चली आ रही पेंटिंग कला का प्रदर्शन किया गया।

विश्व शैलचित्र कला के साथ-साथ आदिवासियों के जीवन के बारे में भी प्रदर्शनी में कलाकृतियां जानकारी दे रही हैं। प्रो. आरके चटट्टोपाध्याय ने व्याख्यान में बताया कि इस्टर्न इंडिया के समय से पेंटिंग पर काफी काम हुआ है। जानकारी दी कि कैसे पेंटिंग को बनाने के बाद उसमें कोयले या किसी अन्य चीजों से रंग भर उसे सुंदर बनाया जाता था। बताया कि बिहार-झारखंड और ओडिशा जैसे राज्यों में अभी कई ऐसे स्थान हैं जहां खोज से अद्भुत शैल चित्र मिल सकते हैं। खोज में कुछ ऐसे साक्ष्य मिले हैं जिससे ये पता चलता है कि इन राज्यों में भी इस्टर्न इंडिया के समय बहुत काम हुआ था।

प्रभात खबर (लाइफ पटना)
24-8-2018

दैनिक जागरण (जागरण सिटी)

29-8-2018

म्यूजियम की चित्र प्रदर्शनी में दिख रहा विश्व का इतिहास

विकास की दौड़ में हम पेड़ और जंगलों को काटते जा रहे हैं। जिससे पत्थरों पर उकेरी जाने वाली कलाकृतियां खत्म होने की कगार पर हैं। इसी शैली को बचाने के लिए बिहार म्यूजियम और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली की ओर से विश्व शैलचित्र कला पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। 14 सितंबर तक आयोजित प्रदर्शनी में आदी काल में मानव कैसे चित्रों को अपने हाथों से आकार दिया करते थे इसकी जानकारी दी जा रही है।

20 हजार बीसी तक के इतिहास

शैलचित्र प्रदर्शनी में कुल 200 चित्रों का प्रदर्शन किया जा रहा है। इसमें 20 हजार साल बीसी तक के इतिहास को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के परियोजना निदेशक डॉ. वंशी लाल मल्ला ने बताया कि विद्वानों द्वारा उच्च परिपक्वता वाले ये रिकॉर्ड चालीस हजार पूर्व प्राचीन तक के हो सकते हैं। भारत में प्रागैतिहासिक शैलचित्र की खोज स्पेन के आल्त मीरा की खोज के 12 वर्ष पहले ही किए गए थे।

आदिवासी जीवन की मिल रही जानकारी : विश्व शैलचित्र कला के साथ-साथ आदिवासियों के जीवन को प्रदर्शनी में दिखाया जा रहा है। मुंबई, गुजरात और उड़ीसा के आदिवासियों पर विशेष फोकस किया गया है। इसमें वो कैसे रहते थे, वो कैसे कम करते थे, इन सभी विषयों पर ध्यान आकृष्ट कराया जा रहा है। जिसे लोग काफी पसंद कर रहे हैं।

अक्टूबर में संग्रहालय में होगी वर्कशॉप

इस प्रदर्शनी में सब से ज्यादा चित्र मध्य प्रदेश से लाए गए हैं। साथ ही दुनिया के इतिहास को चित्रों में बयां किया जा रहा है। बिहार के गोपालगंज और नवादा की कला भी यहां देखने को मिल रही है। बिहार म्यूजियम के संग्रह अध्यक्ष बताते हैं, इस शैली को आगे बढ़ाने के लिए अक्टूबर महीने में इस विषय पर विद्वानों के साथ एक वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा। अगले साल तक बिहार म्यूजियम में सिर्फ बिहार के शैलचित्र पर प्रदर्शनी लगाई जाएगी। इससे बिहार के इतिहास के बारे में भी जानने का मौके मिलेगा।

दैनिक भास्कर

(सिटी भास्कर, पृष्ठ– 1)

10-09-2018

उसके राजा पिता ने बेटे जैसा पाला है। चित्रांगदा अर्जुन के प्यार में पागल हो जाती है और करने लगती है, जो एक बौद्ध भिक्षु है। आनंद को पान के लिए चंडालिका अपनी मां से कहती है होता है, पर प्यार को जीत कर भी दोनों हार जाती हैं। एनाक्षी डे बिस्वास के डायरेक्शन में अल्का, उज्ज्वल, मानसी, रौनक, स्वास्तिका ने सशक्त अभिनय से महिलाओं को संदेश दिया कि वे अपना रास्ता खुद चुनें।

वर्ल्ड केव आर्ट पर बच्चों ने बनाई खूबसूरत पेंटिंग

बिहार म्यूजियम में एग्जीबिशन, वर्कशॉप में दिखा बच्चों की कूची का कमाल

सिटी रिपोर्टर| पटना

बिहार म्यूजियम और इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स न्यू दिल्ली की ओर से बिहार म्यूजियम के टेम्परी गैलरी में विश्व शैलचित्र कला पर आधारित एक एग्जीबिशन लगाया गया। 14 सितंबर तक इस एग्जीबिशन को दर्शक देख सकते हैं। इसके साथ ही इस एग्जीबिशन पर आधारित स्कूली बच्चों के लिए वर्कशॉप का आयोजन शनिवार को बहुउद्देशीय सभागार में किया गया। इसमें पांचवीं से आठवीं क्लास तक के बच्चों ने पार्टिसिपेट किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को मानवजाति के इस प्रारंभिक रचनात्मक कला के विषय में सूचना और जागरूकता प्रदान करना था। विश्व के शैलचित्र मानवीय प्रयासों की रोचक गाथा है, जिसके द्वारा मानव ने अपने सौंदर्य बोध को वास्तविक रूप देने का प्रयास किया। बच्चों ने एग्जीबिशन देखकर पेंटिंग को बहुत ही शानदार तरीके से बनाया। वर्कशॉप में आर्य कन्या विद्यालय, नया टोला, दयानंद कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आशा स्कूल, सरस्वती विद्या मंदिर, बिशॉप स्कॉट बॉय स्कूल जैसे स्कूलों के स्टूडेंट्स ने भाग लिया।

जुटा लेखक-पत्र

पटना | महिलाओं पर हो रहे शोषण घटनाओं पर वी स्पीक संस्था की का आयोजन रविवार को किया सभागार में आयोजित इस कार्यक्र और पत्रकार अपने विचार रखेंगे अब्बास ने बताया कि इस डिस्क की चेयर पर्सन स्वाति मालीवाल, खान, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोश आरजे रेडियो मिर्ची अंजली, व वरिष्ठ पत्रकार अमलेन्दु अस्थाना

'धुनों की यात्रा' में

बदलाव के प्रभाव

पटना | बिहार म्यूजियम में आज स से सिनेमा में संगीत के बदलते दौ किया जाएगा। धुनों की यात्रा ना लेखक और संगीत विशेषज्ञ पंक और पुराने गीतों में बदलाव और बारे में चर्चा करेंगे। 1930 में दे हताश, उदासी और आज के दौ मुद्दे पर बनने वाली संगीत की कि की जाएगी।

कार्ड और पोस्टर पर रचारी शिक्षा की दशा से